श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

परिकरमा

॥ श्री किताब इलाही-दुलहिन अर्स अजीम की ॥

श्री स्यामा महारानी के परमधाम का वर्णन

इस्क का प्रकरण

अब कहूं रे इस्क की बात, इस्क सब्दातीत साख्यात।
जो कदी आवे मिने सब्द, तो चौदे तबक करे रद॥ १ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब मैं इश्क की बात कहती हूं। इश्क श्री राजजी महाराज का साक्षात् स्वरूप है जो शब्दातीत है। यदि किसी तरह से इसकी समझ आ जाए या शब्दों (कहनी) में आ जाए, तो वह चौदह तबकों को रद्द कर देगा (छोड़ देगा)।

ब्रह्म इस्क एक संग, सो तो बसत वतन अभंग।
ब्रह्मसृष्टी ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनन्द अतिरंग॥ २ ॥

श्री राजजी और इश्क एक ही स्वरूप हैं, अर्थात् पारब्रह्म का स्वरूप ही इश्क का स्वरूप है। दोनों अखण्ड परमधाम का स्वरूप हैं और वहीं रहते हैं। इसी प्रकार पारब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि सदा से एक ही अंग हैं और सदा आनन्द की लीला करते हैं।

एते दिन गए कई बक, सो तो अपनी बुध माफक।
अब कथनी कथूं इस्क, जाथें छूट जाए सब सक॥ ३ ॥

अपनी-अपनी अक्ल के अनुसार इस संसार में कईयों ने इश्क के प्रति अपनी व्यर्थ गाथा गाई। अब मैं इश्क की हकीकत बताती हूं जिससे सारे संशय मिट जाएं।

वोए वोए इस्क न था एते दिन, कैयों ढूंढ्या गुन निरगुन।
धिक धिक पड़ो सो तन, जो तन इस्क बिन॥ ४ ॥

अफसोस इस बात का है कि इतने दिन तक संसार में इश्क था ही नहीं। कईयों ने गुण, निर्गुण, आकार, निराकार में खोजा। उस तन को धिक्कार है जिसमें इश्क न हो।

इस्क नाहीं मिने सृष्ट सुपन, जो ढूंढ्या चौदे भवन।
इस्क धनिएं बताया, इस्क बिना पिउ न पाया॥ ५ ॥

स्वप्न की सृष्टि में तो इश्क होता ही नहीं। चौदह लोकों में खोज लिया पर कहीं नहीं मिला। अन्त में स्वयं पारब्रह्म ने ही आकर इश्क की पहचान कराई और कहा कि इश्क के बिना धनी नहीं मिल सकते।

Nijanand App

इस्क है तित सदा अखंड, नाहीं दुनियां बीच ब्रह्मांड।
और इस्क का नहीं निमूना, दूजा उपजे न होवे जूना।। ६ ।।

परमधाम में इश्क सदा अखण्ड है। इस दुनियां में (सारे ब्रह्माण्ड में) इश्क नहीं है। इश्क का कोई नमूना ही नहीं है, क्योंकि इश्क दूसरा पैदा हो ही नहीं सकता और जो है वह पुराना नहीं होता।

इस्क है हमारी निसानी, बिना इस्क दुलहा मैं रानी।
इस्क बिना मैं भई वीरानी, बिना इस्क न सकी पेहेचानी।। ७ ।।

इश्क ही हम ब्रह्मसृष्टियों की पहचान है। बिना इश्क के दूल्हा स्वीकार नहीं करते (धनी मिल नहीं सकते) इश्क के न होने के कारण ही मैं अपने धनी से अलग हुई हूं। बिना इश्क अपने धनी को पहचान नहीं सकी।

वृथा गए एते दिन, जो गए इस्क बिन।
मैं हुती पिया के चरन, मैं रेहे ना सकी सरन।। ८ ।।

मेरा इतना जीवन जो व्यर्थ गया, केवल इश्क न होने के कारण धनी की पहचान न कर सकी। मैं मूल-मिलावा में धनी के चरणों में बैठी थी। इश्क न होने के कारण मैं उनकी शरण में नहीं रह सकी।

क्यों रह्या जीव बिना जीवन, क्यों न आया हो मरन।
अंग क्यों न लागी अगिन, याद आया न मूल वतन।। ९ ।।

बिना इश्क के मैं अब तक जिन्दा कैसे रही? मर क्यों नहीं गई? मेरे अंगों में आग क्यों नहीं लग गई? जो मुझे परमधाम याद नहीं आया।

इस्क जाने सृष्ट ब्रह्म, जाके नजीक न काहूं भरम।
जब इस्क रह्या भराए, तब धाम हिरदे चढ़ आए।। १० ।।

इश्क की पहचान ब्रह्मसृष्टियों को है। इनके अन्दर किसी प्रकार का भ्रम (संशय) रहता ही नहीं। जब वह इश्क में गर्क हो जाती हैं, तो परमधाम और श्री राजजी महाराज उनके हृदय में दिखाई देने लगते हैं।

इस्क तो कह्या सब्दातीत, जो पिउजी की इस्क सों प्रीत।
देखी इस्क की ऐसी रीत, बिना इस्क नाहीं प्रतीत।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज की इश्क से प्रीति के कारण ही इश्क शब्दातीत है। इश्क का ऐसा ही तरीका है। बिना इश्क के विश्वास आता ही नहीं।

इस्क नेहेचे मिलावे पिउ, बिना इस्क न रहे याको जिउ।
ब्रह्मसृष्टी की एही पेहेचान, आतम इस्कै की गलतान।। १२ ।।

इश्क निश्चित ही धनी से मिला देता है। बिना इश्क के ब्रह्मसृष्टि जिन्दा ही नहीं रह सकती। वह इश्क में गर्क होती है। यही उनकी पहचान है।

इस्क याही धनिएं बताया, इस्क याही सृष्टें गाया।
इस्क याहीमें समाया, इस्क याही सृष्टें चित ल्याया।। १३ ।।

श्री राजजी ने इश्क इन्हीं के लिए बताया है और ब्रह्मसृष्टियों ने ही इश्क करके दिखाया है, अर्थात् इन्होंने ही महिमा गाई है। श्री राजजी का इश्क इन्हीं के अन्दर समाया है और ब्रह्मसृष्टियों का चित्त सदा धनी के इश्क में ही रहता है।

Nijanand App

इस्क पिया को बतावे विलास, इस्क ले चले पिउ के पास।
इस्क मिने दरसन, इस्क होए न बिना सोहागिन।। १४ ।।

इश्क पिया के विलास की पहचान कराता है और इश्क ही धनी के पास पहुंचाता है। इश्क से धनी के दर्शन होते हैं और इश्क सुहागिनियों के अलावा दूसरों को होता ही नहीं है।

इस्क ब्रह्मसृष्टी जाने, ब्रह्मसृष्ट एही बात माने।
खास रूहों का एही खान, इन अरवाहों का एही पान।। १५ ।।

इश्क को ब्रह्मसृष्टियां जानती हैं। ब्रह्मसृष्टियां इश्क के अनुसार चलती हैं। इनका खाना-पीना इश्क ही है।

पिया इस्क रस, ब्रह्मसृष्ट को अरस परस।
काहूं और न इस्क खोज, औरों जाए न उठाया बोझ।। १६ ।।

ब्रह्मसृष्टियां सदा पिया के इश्क में गर्क रहती हैं और श्री राजजी ब्रह्मसृष्टियों के इश्क में गर्क रहते हैं। इनके बिना कोई इश्क का बोझ उठा ही नहीं सकता (कोई और इश्क कर ही नहीं सकता), इसलिए इश्क कहीं और खोजने की जरूरत नहीं है।

बात इस्क की है अति घन, पर पावे सोई सोहागिन।
ब्रह्मसृष्ट बिना न पावे, सनमंध बिना इस्क न आवे।। १७ ।।

इश्क की बहुत बड़ी बात है पर जो पा लेता है वही सुहागिनी है। ब्रह्मसृष्टि के बिना इश्क किसी को मिलता ही नहीं, क्योंकि पारब्रह्म से सम्बन्ध हुए बिना इश्क आता ही नहीं है।

धनीजी को इस्क भावे, बिना इस्क न कछू सोहावे।
यों न कहियो कोई जन, धनी पाया इस्क बिन।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज को इश्क ही अच्छा लगता है और उन्हें और कुछ सुहाता ही नहीं है, इसलिए मैंने धनी को बिना इश्क प्राप्त कर लिया है, ऐसा कोई मत कहना।

इस्क बसे पिया के अंग, इस्क रहे पिउ के संग।
प्रेम बसत पिया के चित, इस्क अखंड हमेसा नित।। १९ ।।

इश्क श्री राजजी महाराज के ही अंग में सदा रहता है। श्री राजजी महाराज के चित्त में सदा ब्रह्मसृष्टियों के प्रति प्रेम रहता है। इस कारण से इश्क परमधाम में सदा अखण्ड है।

इस्क बतावे पार के पार, इस्क नेहेचल घर दातार।
इस्क होए न नया पुराना, नई ठौर न आवत आना।। २० ।।

इश्क ही क्षर के पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत (अखण्ड घर) की पहचान करवाकर वहां पहुंचाता है। इश्क कभी नया या पुराना नहीं होता और न किसी नए व्यक्ति को मिलता ही है।

इस्क साहेब सों नहीं अंतर, जो अरस-परस भीतर।
ए सुगम है सोहागिन, जाको अंकूर याही वतन।। २१ ।।

इश्क आ जाने से हमारे और धाम धनी में कोई अन्तर नहीं रहता। इश्क ब्रह्मसृष्टियों को सरलता, सुगमता से प्राप्त होता है, क्योंकि यह इसी घर की रहने वाली हैं।

Nijanand App

ए औरों नाहीं दृष्ट, औरों छूटे न मोह अहं भ्रष्ट।
याको जाने ब्रह्मसृष्ट, जाको एही है इष्ट।। २२ ।।

दूसरे लोगों की यहां नजर नहीं जाती, क्योंकि उनसे झूठा मोह-अहंकार नहीं छूटता। इश्क ब्रह्मसृष्टि ही जानती है, क्योंकि इश्क ब्रह्मसृष्टि का इष्ट है।

इस्क की बात बड़ी रोसन, जासों सुख लेसी चौदे भवन।
सो भी सुख नेहेचल, इस्क दृष्टें न रहे जरा मैल।। २३ ।।

इश्क से बहुत बड़ी बात की पहचान हो जाती है। इश्क से ही चौदह लोकों के जीवों को बहिश्तों का अखण्ड सुख मिलेगा। इश्क की नजर में संसार की चाहना नहीं रह जाती और न ही कोई विकार रह जाता है।

इस्क राखे नहीं संसार, इस्क अखंड घर दातार।
इस्क खोल देवे सब द्वार, पार के पार जो पार।। २४ ।।

इश्क से संसार छूट जाता है और अखण्ड घर की प्राप्ति होती है। इश्क क्षर के पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत धाम के दरवाजे खोल देता है।

इस्क घाए करे टूक टूक, अंग होए जाए सब भूक।
लोहू मांस गया सब सूक, चित चल न सके कहूं चूक।। २५ ।।

इश्क की चोट से अंग के टुकड़े-टुकड़े होकर हड्डियों का चूरा बन जाता है। लहू, मांस सब सूख जाता है और चित्त भूलकर भी इधर-उधर नहीं जाता।

इस्क आगूं न आवे माया, इस्कें पिंड ब्रह्मांड उड़ाया।
इस्कें अर्स वतन बताया, इस्कें सुख पेड़ का पाया।। २६ ।।

इश्क आने से माया नहीं रहती और यह पिण्ड-ब्रह्माण्ड भी छूट जाता है। इश्क घर की पहचान करा देता है। इश्क से ही श्री राजजी का सुख मिलता है।

कोई नहीं इस्क की जोड़, ना कोई बांधे इस्क सों होड़।
इस्क सुध कोई न जाने, दुनी ख्वाब की कहा बखाने।। २७ ।।

इश्क की कोई जोड़ी (बराबरी) नहीं है, इसलिए इश्क की होड़ कोई मत लगाओ। इश्क की सुध कोई नहीं जानता। सपने की दुनियां इश्क का क्या बखान करेगी?

इस्क आवे धनी का चाह्या, इस्क पिया जी ने सिखाया।
पिया इस्क सरूप बताया, इस्कें पिंड ही को पलटाया।। २८ ।।

इश्क जैसा धनी चाहते हैं, वैसा आता है। इश्क श्री राजजी महाराज ने ही सिखाया है। श्री राजजी महाराज ने हम मोमिनों को इश्क का स्वरूप बतलाया है। इश्क ने संसार की चाहना को उल्टाकर धनी की चाहना में लगाया है।

इस्क सोभा बड़ी है अत, इस्क दृष्टें न पाइए असत।
जो कदी पेड़ होवे असत, इस्क ताको भी करे सत।। २९ ।।

इश्क की बड़ी भारी शोभा है। इश्क के सामने झूठ नहीं टिक सकता। यदि किसी झूठे तन में भी इश्क आ जाए तो उसे भी इश्क अखण्ड कर देता है।

Nijanand App

इस्क की सोभा कहूं मैं केती, ए भी याही जुबां कहे एती।
याको जाने सृष्ट ब्रह्म, जाको इस्कै करम धरम।। ३० ।।

इश्क की शोभा का कहां तक बयान करूं? इतना भी जो कहा है यहां की जबान से कहा है। इश्क को ब्रह्मसृष्टियां ही जानती हैं जिनका कर्म, धर्म सब इश्क है।

इस्क है याको आहार, और इस्कै याको वेहेवार।
इस्क है याकी दृष्ट, ए इस्कै की है सृष्ट।। ३१ ।।

ब्रह्मसृष्टियों का आहार और व्यवहार इश्क ही है। इनकी नजर भी इश्क की है, इसलिए यह इश्क की ही सृष्टि हैं।

ए तो प्रेमैं के हैं पात्र, याके प्रेमैं है दिन रात्र।
याके प्रेमैं के अंकूर, याके प्रेम अंग निज नूर।। ३२ ।।

यह ब्रह्मसृष्टियां ही प्रेम के पात्र हैं, इसलिए रात-दिन प्रेम में मग्न रहती हैं। इनके अंकूर प्रेम के हैं और यह पारब्रह्म के नूरी अंग हैं।

याके प्रेमैं के भूखन, याके प्रेमैं के हैं तन।
याके प्रेमैं के वस्तर, ए बसत प्रेम के घर।। ३३ ।।

इनके वस्त्र, आभूषण प्रेम के हैं। इनका तन और घर प्रेम का है।

याके प्रेम श्रवन मुख बान, याको प्रेम सेवा प्रेम गान।
याको ग्यान भी प्रेम को मूल, याको चलन न होए प्रेम भूल।। ३४ ।।

इनका सुनना, बोलना, सेवा करना और गाना सब प्रेम का है। इनका ज्ञान भी प्रेम की जड़ है। इनकी रहनी में भी प्रेम की भूल नहीं पड़ती।

याको प्रेमैं सेहेज सुभाव, ए प्रेमैं देखे दाव।
बिना प्रेम न कछुए पाइए, याके सब अंग प्रेम सोहाइए।। ३५ ।।

इनका सहज स्वभाव, हाल-चाल सब प्रेम का ही है। इनके अन्दर प्रेम के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। इनके सब अंग प्रेम से सुशोभित हैं।

याकी गत भांत सब प्रेम, याके प्रेमैं कुसलखेम।
याके प्रेम इन्द्री अंग गुन, बुध प्रकृती नहीं प्रेम बिन।। ३६ ।।

इनकी करनी का तरीका भी प्रेम है और यह प्रेम में ही मगन रहती हैं। इनके गुण, अंग, इन्द्रिय, बुद्धि और प्रकृति सभी प्रेम के हैं।

याको प्रेमैं को विस्तार, याको प्रेमैं को आचार।
याके प्रेमैं के तेज जोत, याके प्रेमैं अंग उद्दोत।। ३७ ।।

इनके अन्दर प्रेम का ही विस्तार है तथा आचार-विचार सब प्रेम के हैं। इनके मुख भी प्रेम के नूर से झलकते हैं अंग-अंग में प्रेम की मस्ती भरी है।

याको प्रेमैं है रस रंग, याको प्रेम सबों में अभंग।
याको प्रेम सनेह सुख साज, याको प्रेम खेलन संग राज।। ३८ ।।

यह प्रेम के ही आनन्द में मग्न हैं। यह आनन्द सदा अखण्ड है। इनका सिनगार प्रेम-स्नेह का है और श्री राजजी के साथ इनकी लीला भी प्रेम की होती है।

Nijanand App

याके प्रेम सेज्या सिनगार, वाको वार न पाइए पार।
प्रेम अरस परस स्यामा स्याम, सैयां वतन धनी धाम।। ३९ ।।

इनकी सेज्या और सिनगार सब प्रेम का है जो बेशुमार है। श्री राजजी महाराज श्री श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टि का परमधाम में अरस-परस (परस्पर) प्रेम है।

प्रेम पिया जी के आउध, प्रेम स्यामा जी के अंग सुध।
ब्रह्मसृष्टी की एही विध, ए दूजे काहू ना दिध।। ४० ।।

धनी का अस्त्र प्रेम ही है, प्रेम से ही श्री श्यामाजी को स्वरूप की पहचान होती है। ब्रह्मसृष्टियों के साथ भी श्री राजजी का श्यामाजी की तरह ही प्रेम का तरीका है। यह सुख दूसरे को नहीं मिलता।

प्रेम सेन्या है अति बड़ी, जब मूल आउध ले चढ़ी।
सो रहे न काहू की पकड़ी, यासों सके न कोई लड़ी।। ४१ ।।

प्रेम की फौज बड़ी शक्तिशाली है। जब यह इश्क के हथियार लेकर चढ़ाई करती है तब किसी के रोके रुकती नहीं है और कोई इसके सामने नहीं टिक सक़ता (कोई ठहर नहीं सकता)।

प्रेम आप पर कोई ना लेखे, बिना धनी काहूं न देखे।
प्रेम राखे धनी को संग, अपनो भी न देखे अंग।। ४२ ।।

प्रेम में मेरा-तेरा (द्वैत) नहीं होता। प्रेम धनी के बिना और किसी को नहीं देखता। प्रेम सदा हमको धनी के साथ रखता है और अपने अंग की भी सुध नहीं लेने देता।

और सबन सों चित भंग, एक पिया जी सों रस रंग।
प्रेम पिया जी के अंग भावे, पिया बिना आपको भी उड़ावे।। ४३ ।।

प्रेम एक पिया का ही आनन्द दिलवाता है और दुनियां का साथ छुड़वाता है। प्रेम से हमें पिया प्यारे लगते हैं और पिया के बिना लगता है कि अपने आपको समाप्त कर दो।

जो कोई पिउ के अंग प्यारा, ताको निमख न करे प्रेम न्यारा।
प्रेम पिया को भावे सो करे, पिया के दिल की दिल धरे।। ४४ ।।

जिसको धनी प्यारे लगते हैं उसको प्रेम धनी से एक पल भी जुदा नहीं करता। प्रेम जो पिया को अच्छा लगता है वही कराता है और प्रीतम के दिल की चाहना के अनुसार ही करनी कराता है।

प्रेम आतम दृष्ट न छोड़े, प्रेम बाहेर दृष्ट न जोड़े।
प्रेम पिया के चितसों चित न मोड़े, प्रेम और सबन सों तोड़े।। ४५ ।।

प्रेम की नजर पिया को नहीं छोड़ती और बाहर किसी से नजर नहीं जोड़ती। प्रेम ही पिया से विमुख नहीं होने देता। यह प्रेम ही बाकी सबसे नाता तुड़वा देता है।

पिया के दिल की दिल लेवे, रैन दिन पिया दिल सेवे।
पिया के दिल बिना सब जेहेर, औरों सों होए गयो सब वैर।। ४६ ।।

पिया के दिल में जो चाहना होती है उसी के अनुसार प्रेम चलता है। यह रात-दिन प्रीतम की दिल से सेवा करता है। प्रीतम के बिना सारी दुनियां जहर के समान लगती है तथा उसे दुनियां से दुश्मनी हो जाती है।

Nijanand App

पिया के दिल की सब जाने, पिया जी को दिल पेहेचाने।
अंग पिउजी के दिल आने, पिउ बिना आग जैसी कर माने।। ४७ ।।

प्रेम ही पिया के दिल की सब बातें जानता है और पहचानता है। अपने अंग में पिया के स्वरूप को बसाता है। प्रीतम के बिना सारा संसार अग्नि जैसा लगता है।

प्रेम अंदर ऐसी भई, नींद माहें की उड़ कहूं गई।
गुन अंग इन्द्री पख, पिया प्रेमें हुए सब लख।। ४८ ।।

प्रेम से मन के अन्दर ऐसी भावना जागृत होती है कि सारा अज्ञान का अन्धकार उड़ जाता है। हमारे गुण, अंग, इन्द्रियां और पक्ष प्रीतम को देखकर सब प्रेम के हो गए।

सब देखे पिया दिल सामी, दिल देखे अंतरजामी।
पिउ के दिल की पेहेले आवे, पिया मुख थें केहेने न पावें।। ४९ ।।

सभी ब्रह्मसृष्टियां पिया को देखकर उनके दिल की बातें जान जाती हैं। यह ऐसी अन्तर्यामी हैं कि धनी को मुख से कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। इनकी इच्छा को पहले ही जान जाती हैं।

आतम एक हुई निसंक, ना रही जुदागी रंचक।
प्रेम दिल भर हुई दिल, पिया प्रेमे रहे हिल मिल।। ५० ।।

इस तरह से मोमिनों की आतम श्री राजजी महाराज के साथ एकाकार हो गई और तिल के बराबर भी जुदाई नहीं रही। मोमिनों के दिल पिया के प्रेम से भर गए और एकाकार हो गए।

प्रेम आप न देखे कित, दृष्ट पियाई देखे जित।
निज नजर प्रेम खोलत, जाग धाम देखावे सर्वत्र।। ५१ ।।

पिया की जहां नजर होती है मोमिन भी वहीं देखते हैं। प्रेम ही मोमिनो को अन्तरात्मा की नजर खोलकर जगा देता है और परमधाम के दर्शन कराता है।

पिया प्रेमैं सों पेहेचान, प्रेम धाम के देवे निसान।
प्रेम ऐसी भांत सुधारे, ठौर बैठे पार उतारे।। ५२ ।।

प्रेम से पिया की पहचान होती है और प्रेम से ही परमधाम के पच्चीस पक्ष नजर आते हैं। प्रेम इस तरह सुधार कर देता है कि यहां बैठे-बैठे ही अपने घर पहुंच जाते हैं।

पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक।
जब आतम प्रेमसों लागी, दृष्ट अंतर तबहीं जागी।। ५३ ।।

करोड़ों कल्प के लम्बे रास्ते को प्रेम एक पलक के अन्दर पार पहुंचा देता है। जब आत्मा का प्रेम से लगाव होता है तब अन्दर की नजर जागृत हो जाती है।

जब आया प्रेम सोहागी, तब मोह जल लेहेरां भागी।
जब उठे प्रेम के तरंग, ले करी स्याम के संग।। ५४ ।।

जब सुहागिनियों को प्रेम मिल जाता है तब भवसागर (माया) की लहरें भाग जाती हैं। जब प्रेम की तरंग उठती है तो धनी का मिलन होता है।

Nijanand App

पेहेचान हुती न एते दिन, प्रेम नाहीं पिया सों भिंन।
पिया प्रेम पेहेचान जो एक, भेली होसी सबों में विवेक।।५५।।

इतने दिन तक अभी पहचान नहीं थी कि प्रेम पिया से अलग नहीं है। अब पिया और प्रेम एक ही हैं, का ज्ञान मिल गया। अब इसका ज्ञान सभी सुन्दरसाथ को हो जाएगा।

जब चढ़े प्रेम के रस, तब हुए धाम धनी बस।
जब उपजे प्रेम के तरंग, तब हुआ धाम धनी सों संग।।५६।।

जब प्रेम के रस को पिया, तो धाम धनी मेरे हो गए। जब प्रेम की मस्ती आई, तो धनी का मिलन हुआ।

प्रेम नजरों जो कछू आया, ताको इतहीं अखंड पोहोंचाया।
प्रेम है बड़ो विस्तार, भवजल हुतो जो खार।।५७।।

प्रेम जिसकी नजरों में आ गया, वही अखण्ड में पहुंच गया। प्रेम का विस्तार बहुत बड़ा है। उसने खारे भवसागर से पार उतार दिया।

सो मेट किया सुधा रस, सुख अखंड धनी को परस।
प्रेमें गम अगम की करी, सो सुध वैराट में विस्तरी।।५८।।

प्रेम ने खारे भवसागर को अमृत बना दिया। धनी का अखण्ड सुख मिल गया। प्रेम ने ही जहां कोई नहीं पहुंच सका, वहां पहुंचा दिया। यह खबर सारे वैराट में फैल गई।

प्रेमें करी अलख की लख, त्रैलोकी की खोली चख।
तब छूट्या सबों से अभख, सब हुए स्याम सनमुख।।५९।।

प्रेम ने पारब्रह्म के दर्शन करा दिए और ब्रह्मा, विष्णु, महेश की आंखें खोल दीं। तब सबकी झूठे संसार की चाहना हटी और श्री राजजी महाराज के दर्शन हुए।

जब प्रेम सबों अंग पिआ, अपना अनुभव कर लिया।
तब वार फेर जीव दिया, अब न्यारे न जीवन जिया।।६०।।

जब सब अंगों में पिया का प्रेम आ जाए तो अपनी परआतम का अनुभव हो जाएगा। तब अपने पिया पर कुर्बान हो गए। पिया जो जीवन के प्रीतम हैं कभी हमसे जुदा नहीं हो सकते।

मूल अंग आया इस्क, दूजा देखे न बिना हक।
जब छूटे प्रेम के पूर, प्रगट्या निज वतनी सूर।।६१।।

जब अपनी परआतम में इश्क आ गया, तब श्री राजजी महाराज के बिना कुछ नजर नहीं आता। जब प्रेम का प्रवाह बढ़ जाता है, पूर्ण प्रेम आ जाता है, तब परमधाम का इश्क पैदा हो जाता है।

जब प्रेम हुआ झकझोल, तब अंतर पट दिए खोल।
जब चढ़े प्रेम के पुन्ज, निज नजरों आया निकुंज।।६२।।

जब प्रेम झकझोर देता है तब अन्दर की आंखें खुल जाती हैं। जब प्रेम की लहरें समूह में आने लगीं तो परमधाम के दर्शन होने लगे।

Nijanand App

जब प्रेम हुआ प्रघल, अंग आया धाम का बल।
तुम यों जिन जानो कोए, बिना सोहागिन प्रेम न होए।। ६३ ।।

जब प्रेम पूरे जोश में आया, तो अपने अंग में परमधाम की शक्ति आ गई। यह मत समझो कि सोहागिनियों के बिना किसी और को प्रेम मिल सकता है।

प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारै के पार जो पार।
प्रेम धाम धनी को विचार, प्रेम सब अंगों सिरदार।। ६४ ।।

प्रेम से सब दरवाजे खुल जाते हैं। क्षर के पार अक्षर, अक्षर के पार अक्षरातीत धाम तथा धाम धनी की पहचान हो जाती है। इस तरह से प्रेम सब अंगों में सिरदार (प्रमुख) है।

इस्कै में पोहोंचाया, इस्कें धाम में ले बैठाया।
इस्कें अंतर आंखें खुलाई, धनी साथ मिलावा देखाई।। ६५ ।।

श्री राजजी महाराज ने इश्क के कारण ही खेल में पहुंचाया और इश्क के वास्ते ही परमधाम में मूल-मिलावा में बिठाया। अब यहां इस संसार में भी इश्क से ही अन्दर की आंखें खोलकर धनी के साथ मूल-मिलावा में साथ के दर्शन कराएंगे।

कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान।
ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए।। ६६ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि तुम प्रेम के समान दूसरे किसी को मत समझो। प्रेम की मस्ती में ही बड़ी उमंगों के साथ घर वापस आए और श्री राजजी महाराज ने गले से लगाया।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ६६ ।।

श्री धाम को बरनन मंगला चरन

राग श्री धना श्री

ब्रह्मसृष्टी लीजियो, हांरे सैयां ए है अपना जीवन।
सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्मसृष्टी लीजियो।। १ ।। टेक ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अपना मूल घर परमधाम है और वही अपना जीवन है। उसे ग्रहण करो।

सास्त्र सब्द मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सब्दातीत।
ताको भी कलस हुओ अखंड को, तापर धजा धरूं तिनथें रहित।। २ ।।

संसार के सभी धर्मग्रन्थ और वाणी शब्द के अन्दर क्षर तक ही ज्ञान देती है। उन सबमें श्रेष्ठ कलश के समान क्षर के पार बेहद का ज्ञान देने वाली यह वाणी है। इसका भी कलश अखण्ड परमधाम का वर्णन है उस पर भी ध्वजा के समान मूल-मिलावा खिलवत खाना का बयान सबसे अलग है।

मगज वेद कतेब के, बंधे हुते जो वचन।
आदि करके अबलों, सखी कबहूं न खोले किन।। ३ ।।

वेद और कतेब के छिपे रहस्यों को आज दिन तक किसी ने नहीं खोला है।

Nijanand App